

DPN 6424

Title : संवर्त्ता स्तोत्र SAMVARTTĀ STOTRA

Run. No. 7149

Cat. No. 286

Micro. No.

Subject स्तोत्र / Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 20 x 6.5

^{Extant}
Folios 1-6

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act / verses 1 - 10 only

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
श्री संवर्त्तमिण्डुलानो कद पदे निहितानन्द शान्ति सुखीमा , सृष्टि न्याये चतुष्टय मकुण्डं पुष्पागते

0 cmts.

5

10

15

20

पञ्चकेनान्य षड् रेवाचारः पञ्चकेन्यं पुनपि वलुः षोडशाश्रमिषेदं देवोष्टो मुनि
मध्ये हसक फर कला किन्दु पुष्पाक्ष मुद्रा ॥१॥

श्रीसर्वलोकमण्डलान्ककमयन्दनिहगानन्दगाकिमूलीमा सुद्वि
 न्यायवदुक्तमकलक लणगयष्टकयान्यषट्क उच
 त्यावश्यककान्ययून जयिवदुवश्यकगाल्लारुथक
 दद्याष्टामूर्तिमध्यरु सकरुवकलाविन्दूयव्याक
 मूदा ॥ १॥ वृद्धकोमालवालय वसविवकलावकदवीकमा

ना श्रीनार्थचन्द्रयूयोनवनवकविनयुग्मरुदुसा २० ॥ १ ॥
 ल्पसिद्धावनाचयुधम कलियुगकाङ्क्षवाधिका २० ॥ २ ॥
 धार्थयुगगिद्यानवयु वृषयननयुमल्लवधिनयु ॥ ३ ॥
 सन्मननगादुयिष्ठक सकलसकलथाउमनकाक ॥ ४ ॥
 मानक आदोर्ध्वमण्डलवेयचिरुमविमलयुद्धसद्भाववृन्द ॥ ५ ॥

जादावस्मादशां नृकुलकुमसकलमण्डुलकानयवै सध्व
 नस्तिकमणयशुमलक यद्वसिष्ठं शुद्धिगिवाल्मी ॥३॥
 मध्येविशाम्यरु मिष्ट्य गवसनरुवध्वयदस्वाधिका
 न संसृष्टयनरुस्मिन मगरुनूवनरु नवध्वीकृडग
 ॥ ॥ ०० निमन्तानरु नव सवर्तस्मृण ॥ ॥ नैजलुयासागकी

रुगाख्यायियधगनियुगादृक्वायिकवा नैगस्याडाडियान
 यवकनसदिगमधम सुसदीकः ॥ १ ॥ गङ्गाजालम्
 नारुयुक्कडिठनिलय दकिगल्यवकाणो श्रीवाम
 यूक्कीयी० यशुजनक नयुनिगयनविश्व ॥ १ ॥ कुत
 स्याद्यकामचूयमदनकलयुग सर्वसिद्धालयनः श्रीवि

लानकसमस्तयवमगिवकलालकनथागवृन्द ॥ १ ॥ गङ्गा
 दिद्यलिगयवमसुख कनविन्दयसुचूय कीनि
 नानन्दसुचूयगदूयवि सधनायदुयकायविकिन्न ॥ १ ॥
 गूविद्याशोगयगम्य मन्त्रवविमलनिगुयी० लल
 ठं नैवद्याकसमस्तु निलयजननीचूडशकिशिरुदा

॥ अन्तर्यामिनीयसायं नूधिकावल्लकाक्ष ॥ ७ ॥ उन्मत्त
मिलास्तन सि निधी कायक ॥ कीर्तिविशिनि
वृक्षसिद्धिर्वैव दुसागल ॥ उन्मत्तदवदव
वृक्षयाजानानिक लाकुमा ॥ ७ ॥ उन्मत्तदवदव
नन्यासकुट्टकमन्त्रा यजिनसिद्धिदरुड ॥ सुनिष्ठा

निः
यमिबंदय ७ ॥ ॐ निसकानसृ ॥ ॥ १०० नभासुनम
दासायसू ददये वायवे ॥ १ ॥ काकिनिविश्वव
भ नादाश्वविन्दु मा लिनि ॥ १ ॥ अदहायसम
त्यमे उचलविश्ववा विनि ॥ १ ॥ महाकुललिनिनि
॥ २ ॥ सामसू यीनिमव्यम्

दम्भाकावलम्विनि. ॥८॥ उमाश्वयुक्तकलोचि द्वादम्भात्यवर्चस
भूत्याभूत्याकवावसं द्वादसाश्वयुक्तकलोचिनि. ॥९॥ ल
माश्वयुक्तमादवि. द्वादसामिनि. ॥१०॥ द्वादसामिनि. ॥१०॥ द्वादसामिनि. ॥१०॥
उसमूलील्लो म. ॥११॥ द्वादसामिनि. ॥११॥ द्वादसामिनि. ॥११॥
यवमानन्द. गालमूर्द्धिवावसि. ॥१२॥ द्वादसामिनि. ॥१२॥ द्वादसामिनि. ॥१२॥